Vol.- 16 (July-December, 2019)

ISSN No. 2277-4270
UGC List No. - 40768

आम्नायिकी
ĀMNĀYIKĪ

षोडशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2019

VOL.: 16, JULY-DECEMBER, 2019

षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका

(A HALF-YEARLY PEER REVIEWED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः

Vol.: 16
(July– December 2019)

आम्नायिकी
ĀMNĀYIKĪ

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

विषयानुक्रमणिका

क्रमः	विषयः	लेखकाः	पृष्ठ सं०
१.	नादबिन्दूपनिषदि प्रणवतत्त्वविवेचनम्	प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, डॉ० आशीषमौद्गिल:	१-४
२.	वर्तमानपरिदृश्ये पातञ्जलयोगदर्शनस्य प्रासङ्गिकत्वमुपादेयत्वञ्च	प्रो० उमा रानी त्रिपाठी	५-९
३.	सांप्रतिककाले धर्मस्य श्रेयस्त्वम्	डॉली पण्डा	१०-१३
४.	पर्यावरणसंरक्षणस्य प्रासङ्गिकता	बलभद्रकर्ण:	[illegible]
५.	प्राकृतिकापदाकारणानां ज्योतिषपर्यावरणभूगोलदृशा विमर्शः	अभिषेक गौतम	[illegible]
६.	कर्मकाण्डस्वरूपसमीक्षणम्	पुनीतकुमारझा:	[illegible]
७.	निरुक्तस्योपयोगिता	डॉ० मनीकुमारझा	[illegible]
८.	यमस्य स्वरूपम्	सिकेन्द्रमणि त्रिपाठी	[illegible]
९.	आचार्यजयमन्तमिश्रस्य वैदुष्यम्	गायत्री	[illegible]
१०.	शुक्लयजुर्वेदीय मंत्रों द्वारा कायचिकित्सा	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	[illegible]
११.	वैदिक पादप विज्ञान के कतिपय सन्दर्भ	प्रो0 नीरज शर्मा	[illegible]
१२.	प्राचीन जातिगान	डॉ0 स्वरवन्दना शर्मा	[illegible]
१३.	अर्वाचीन संस्कृत के प्रमुख नाटकों में अर्थप्रकृति–विमर्श	डॉ0 मधु सत्यदेव	[illegible]
१४.	मानव जीवन में सूर्य का महत्त्व	डॉ0 अर्चना पाण्डेय	६२-६७
१५.	आयुर्वेद एवं वाल्मीकीय रामायण	डॉ0 लक्ष्मी मिश्रा	६८-७७
१६.	रिसालः–ए–हक़नुमा और वेदान्तदर्शन में ब्रह्माण्ड–विज्ञान : दार्शनिक संदर्भ में	डॉ0 वाहिद नसरू	७८-९०
१७.	वैदिक स्वर–प्रक्रिया	डॉ0 कर्तार चन्द शर्मा	९१-९७
१८.	तृत्सु शब्द का पारिभाषिक निहितार्थ	डॉ0 पुष्पा दीक्षित	९८-१००
१९.	हिन्दी नवगीत : एक विश्लेषण	डॉ0 अमरनाथ तिवारी	१०१-१०८
२०.	महात्मा गाँधी का राष्ट्रवाद	डॉ0 आलोक प्रताप सिंह विसेन	१०९-१११
२१.	आचार्य धर्मसूरी और उनका रचना-संसार	डॉ0 राकेश कुमार	११२-११८
२२.	वैदिक गृह्ययागों की प्रासङ्गिकता	डॉ0 जयेश मिश्र	११९-१२२
२३.	स्वतंत्रता के पश्चात् पंचायतराज-व्यवस्था	डॉ0 संजय पाठक	१२३-१२७
२४.	नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) का काव्य	डॉ0 सुमन सिंह	१२८-१३२
२५.	वैदिक साहित्य में हास्य	डॉ0 स्मिता शर्मा	१३३-१३७
२६.	'कर्णसुन्दरी' नाटिका : एक दृष्टि	डॉ0 करुणेश त्रिपाठी	१३८-१४१
२७.	भक्तिकालीन कवियों का उदय : तत्कालीन समय की माँग	डॉ0 रीतू भटनागर	१४२-१४४

वैदिक पादप विज्ञान के कतिपय सन्दर्भ

प्रो. नीरज शर्मा*

प्राच्य भारतीय कृषि तन्त्र में उद्यान-विज्ञान महत्त्वपूर्ण एवं अन्यतम आयाम रहा है। वैदिक काल से ही पादप वनस्पतियों तथा औषधियों के विविध प्रयोग प्रशस्त होते रहे हैं। पौधों की पहचान, उनकी रचना, उत्पादन क्षेत्र, कर्मकाण्डीय विनियोग, औषध-भैषज्य प्रयोग के अनेक परिपूर्ण विवरण वैदिक संहिताओं में उपलब्ध होते हैं। पादप विज्ञान के विषय में वैदिक संहिताओं के अतिरिक्त उपनिषदों, पुराणों, आयुर्वेद शास्त्रीय चरक एवं सुश्रुत संहिताओं सहित वृहत्संहिता, उपवन विनोद, कृषि पराशर, समरांगण सूत्रधार, अर्थशास्त्र, शिवतत्त्वरत्नाकर, विश्ववल्लभ आदि में अनेक जानकारियाँ मिलती हैं।

भारतीय परम्परा में सृष्टिचक्र के अन्तर्गत पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति के क्रम के उपरान्त पृथ्वी से औषधियों की उत्पत्ति का उल्लेख है तथा औषधियों के द्वारा अन्न एवं अन्न से पुरुष अथवा प्राणी जगत् की सृष्टि मानी गई है। तैत्तिरीयोपनिषद में इस प्रकार यह क्रम वर्णित है-

आत्मन: आकाश: सम्भूत: आकाशाद् वायु: वायोरग्नि:

अग्नेराप: अद्भ्य: पृथिवी, पृथिव्या ओषधय: ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नात् पुरुष:।[1]

वनस्पतियाँ मानव जीवन के लिये अमृतस्वरूपा है। फल, फूल, काष्ठ, छाया, आश्रय द्वारा ये सम्पूर्ण प्राणिजगत् का भरण-पोषण करती हैं। ये ही मनुष्य के आरोग्य के निमित्त भैषज्य को प्रदान करती हैं। वैदिक ऋषियों ने पौधों की उपयोगिता एवं महत्त्व को समझा तथा उसे देवत्व में प्रतिष्ठित किया। ऋग्वेद के औषधिसूक्त में पूरे 23 मंत्रों में इनका महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। औषधियों की उत्पत्ति मानव सृष्टि से पूर्व हुई है। औषधियाँ मानव मात्र की रक्षा करती हैं तथा संरक्षण प्रदान करती हैं, अत: वे माता के तुल्य हैं।[2] यजुर्वेद तथा अथर्ववेद संहिताओं में भी शताधिक मन्त्रों में वनस्पतियों-पादपों का विवरण उपलब्ध होता है। वनस्पति जगत् का सम्बन्ध औद्भिद् द्रव्यों से है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में वनस्पतियों के तीन भेद दृष्टिगोचर होते हैं-

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुध:[3]

यहाँ वनस्पति के 3 भेद बताये गये- वनस्पति, औषधि एवं वीरुध। आचार्य सायण ने इनके क्रमश: अर्थ दिये हैं- महावृक्ष, व्रीहियवादि एवं वनलतायें। अथर्ववेद में ही इन चारों के विषय में बताया गया-

* अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर।

वनस्पतीन् वानस्पत्यनोषधीरुतवीरुध:।[4]

वनस्पति, औषधि तथा वीरुध क्रमश: वृक्ष, पादप तथा वन लताएँ हैं। वनस्पति तथा वृक्ष सामान्यत: 'वृक्ष' पद से ही संकेतित हैं।[5] ऋग्वेद में वनस्पतियों के पुष्पवती, प्रसूवरी-फलवती आदि भेद दिये गये-

औषधी: प्रतिमोदध्वं पुष्पवती: प्रसूवरी:।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुध: पारयिष्णव:[6]
या: फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वंहस:॥[7]

अर्थात्

प्रकार				विशेषता
फलिनी	-	नारिकेल, व्रीहि आदि	-	फलयुक्त
अफला	-	इक्ष, पत्र, शाकादि	-	फलरहित
अपुष्पा	-	उदुम्बर, प्रियंगु आदि	-	पुष्परहित
पुष्पिणी	-	बन्धूक, जया, आढकादि	-	पुष्पयुक्त

उक्त संकेत से स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में पेड-पौधों की आकृतिगत समानताओं तथा विशिष्टताओं के आधार पर पहचान कर उनका वर्गीकरण किया गया है। वैदिक साहित्य के आधार पर Plant Taxonomy Classification निम्नानुसार किया जा सकता है। वेद में आकृति के आधार पर वनस्पतियों के 4 वर्ग प्राप्त हैं-

1. आकृति के आधार पर - वनस्पति, वानस्पत्य, औषधि, वीरुध।

2. स्वरूप के आधार पर - पुष्पगत विशेषता तथा भोज्यगत उपादेयता के आधार पर औषधियाँ 4 प्रकार की है[8]-

(1) पुष्पयुक्त (2) पल्लवयुक्त (3) फलसहित (4) फलरहित

अथर्ववेद में ही इस वैशिष्ट्य से औषधियों का निम्न वर्गीकरण उपलब्ध है-

"**प्रस्तृणवती स्तम्बिनीरेकशुङ्गा** प्रतन्वतीरोषधीरावदामि।

अंशुमती: काण्डिनीर्या विशाखाह्वयामि ते वीरुधो वैश्ववीरुग्ा: पुरुषजीवनी।[9]

(1) प्रस्तृणवती - विशेष विस्तारवाली (2) स्तम्बिकी – गुच्छों वाली झाडीनुमा
(3) एकशुङ्गा - एक कोंपल वाली (4) प्रतन्वती - बहुत फैलने वाली
(5) अंशुमती - अनेक स्कन्ध वाली (6) काण्डिनी - परुओं वाली

(7) विशाखा - विशेष शाखाओं वाली

3. गुणों के आधार पर वर्गीकरण[10]

"यद्व: सह सहमाना वीर्यं यज्ञ वो बलम्।
तनेमस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं...
श्रीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्।
अरून्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह हुवेस्मा अरिष्टतातये"

गुणों के आधार पर भेद -

(1) सहमाना- रोगनाशक (2) जीवला जीवन्तीम्- आयुदायक

(3) नघारिषां- हानि नहीं करने वाली (4)अरुंधती -अवरोध रहित

(5) उन्नयतीं- ऊर्ध्वगामी

4. रंगों के आधार पर वर्गीकरण-

या बभ्रवोश्च शुक्रा रोहिणीरूत प्रश्नय:।
असिक्नी: कृष्णा ओषधी: सर्वा अच्छावदामसि॥[11]

वर्ण के आधार पर भेद-

(1) बभ्रु (Brown) (2) शुक्र (White) (3) रोहिणी (Red) (4) पृश्नि (Multi Colour) (5) असिक्नी (Sworthy) (6) कृष्ण (Black)

उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकरण - अथर्ववेद में उत्पत्ति स्थल के आधार पर भी वनस्पतियों का वर्गीकरण किया गया है-

या रोहन्त्याङ्गिरसी: पर्वतेषु समेषु च।
ता न: पयस्वती: शिवा ओषधी: सन्तु शं हृदे॥[12]
अवकोल्बा उदकात्मान ओषधय:।
व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्गय:॥[13]
उपजीका उद्धरन्ति समुद्रादधि भेषजम्।[14]

उत्पत्ति स्थान के आधार पर वनस्पतियाँ निम्न रूप में वर्गीकृत हैं-

1. पहाड़ों पर होने वाली 2. समतल भूमि पर होने वाली

3. नदी-तालाब आदि में होने वाली 4. समुद्र के भीतर उत्पन्न होने वाली

अथर्ववेद के ही एक मंत्र में औषधियों के मधुमय स्वरूप का विवेचन किया गया है-

मधुमन्मूलं मधुमग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव।

मधुमत् पर्णं मधुमत् पुष्पमासां मधो: संभक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुहतां गोपुगरोगवम्॥[15]

इन औषधियों के मूलभाग, मध्यमभाग, अग्रभाग, पत्ते तथा पुष्प आदि सभी मधुर होते हैं। ये मधुर रस से सिञ्चित तथा अमृत का सेवन कराने वाली हैं।

वैदिक साहित्य में इन वनस्पतियों की जैविक संरचना के विषय में भी पर्याप्त वर्णन है। वर्तमान वनस्पतिशास्त्र की Morphalogy शाखा के अनुसार पेड़-पौधों के विभिन्न अंगों के स्वरूप (Form), आकृति (Features) का अध्ययन किया जाता है जैसे- जड़ (Root), तना (Stem), पत्र (Leave), पुष्प (Flowers), बीज (Seeds) तथा फल (Fruits) । इन सभी अंगों के बाह्यस्वरूप विवेचन को External Morphology तथा आंतरिक अंगों के अध्ययन को Internal Morphology कहते हैं। वैदिक वाङ्मय में वनस्पतियों के इन आंतरिक एवं बाह्य स्वरूपों के प्रारंभिक रूप वर्णित किये गये। तैत्तिरीय संहिता में पौधे के विभिन्न अंगों का सम्पूर्ण वर्णन है-

औषधिभ्य स्वाहा: मूलेभ्य स्वाहा तूलेभ्य: स्वाहा काण्डेभ्य: स्वाहा वल्शेभ्य: स्वाहा पुष्पेभ्य: स्वाहा फलेभ्य: स्वाहा।[16]

इस मंत्र में वृक्ष के विभिन्न अंगों- मूल (Root), तूल (Penicle - Shoot), काण्ड (Stem), वल्श (Twing), पुष्प (Flower) तथा फल (Fruit) का स्पष्ट विवरण है। यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता में भी यही विवरण किञ्चित् अधिक स्पष्ट तथा उपयोगी है-

वनस्पतिभ्य: स्वाहा मूलेभ्य: स्वाहा
तूलेभ्य: स्वाहा स्कन्धेभ्य: स्वाहा
शाखाभ्य: स्वाहा पर्णेभ्य: स्वाहा
पुष्पेभ्य: स्वाहा फलेभ्य: स्वाहा॥[17]

इस मन्त्र में स्कन्ध (Corone), शाखा (Branches) तथा पर्ण (Leaves) भी सम्मिलित हैं। विष्णुपुराण में पादप जगत् का यह वर्गीकृत विवरण पौधों के अंग-प्रभागों का विशेष विवेचन करता है। यहाँ पौधे के आन्तरिक भागों का भी वर्णन है-

व्रीहिबीजे यथा मूलं नालं पत्राङ्कुरौ तथा।
काण्डं कोषस्तु पुष्पं च क्षीरं तद्वच्च तण्डुला:॥
तुषा: कणाश्च सन्तो वै यान्त्यविर्भावमात्मन:।
प्ररोहहेतुसामग्रीमासाद्य मुनिसत्तम ॥[18]

अर्थात्- हे मुनिश्रेष्ठ ! जिस प्रकार धान के बीज में मूल, नाल, पत्ते, अंकुर, तना, कोश, पुष्प, क्षीर, तण्डुल, तुष और कण सभी रहते हैं तथा अंकुरण की हेतुभूत (भूमि-जलादि) सामग्री के प्राप्त होने पर वे प्रकट होते हैं...।

इस पद्य में अंकुर- Embryo, मूल - Root, नाल - Stem, पत्र - Leaf, पुष्प- Flower, क्षीर - Milky Sap, कण - Endosperm आदि का स्पष्ट उल्लेख है।

वृहदारण्यकोपनिषद् के याज्ञवल्क्य-शाकल्य संवाद में पुरुष शरीर के समान ही वनस्पति की भी शरीर रचना बताई गई है[19]-

यथा वृक्षो वनस्पतिः तथैव पुरुषोऽमृषा।
लोमानि तस्य लोमानि पर्णानि त्वगन्त्योत्पाटिका बहिः।
त्वच एवास्य रुधिरं प्रत्यन्दि त्वच उत्पटः।
तस्मात्तदा तृण्णात् प्रैति रसो वृक्षात् इवाहतात्॥
मांसान्यस्य शक्राणि किनाटं स्नाव तत् स्थितम्।
अस्थिन्यन्तरतो दारूणि मज्जा मज्जोपमा कृता॥

मनुष्य तथा वृक्ष की शारीरिक संरचना की तुलना-

	मनुष्य	वृक्ष
1.	लोम	पर्ण
2.	त्वक्	बाह्य (Epidermics)
3.	रुधिर	रस
4.	मांस	आन्तरिक त्वक्
5.	स्नायु	किनाट (Fibrows Tissuls)
6.	अस्थि	दारू (काष्ठ)
7.	मज्जा	मज्जा (Pith)

अवितत्त्व अथवा क्लोरोफिल के कारण वनस्पतियाँ अपने हरे वर्ण और पत्तों की क्लोरोप्लास्ट नामक अतिसूक्ष्म संरचना के कारण सौर ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करती हैं। प्रकाश संश्लेषण की इस महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया में पौधे अपनी जडों द्वारा पृथ्वी से पानी और खनिज सोखते हैं और वायु मण्डल से कार्बन-डाई आक्साइड लेते हैं तथा सूर्य किरणों से कार्बोहाइड्रेट्स बनाते हैं एवं संगृहीत करते हैं। अथर्ववेद में इस क्रिया के आरंभिक स्वरूप को वर्णित किया गया है[20]-

अविर्वैनाम देवतर्तेनास्ते परीवृता।
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः॥

संस्कृत वाङ्मय के उपलब्ध कृषिवैज्ञानिक चिन्तन के अंतर्गत उद्यानिकी जैसा महत्त्वपूर्ण विषय वैदिक काल से ही उपादेय रहा है। वैदिक संहिताओं के औषधि सूक्तों में वनस्पतियों का ही गुणगान किया गया है। परवर्ती साहित्य में भी प्रकृति-संसार लेखनी में व्याप्त रहा है। आयुर्वेद शास्त्र का तो यह प्राण ही है, जहाँ चिकित्सा के लिए औषधियों की पहचान, उत्पादन, गुणधर्मादि का विशद् विवेचन किया गया है। पौधों में चेतना तथा जीवन के दर्शन का प्रमाण वैदिक संहिताओं में ही मिल गया था।

संदर्भ-

1. *तैत्तिरीयोपनिषद् 2-1-1*
2. वेदो में आयुर्वेद पृ .235
3. अथर्ववेद 11.81.
4. अथर्ववेद 8.8.14
5. शतपथब्राह्मण 1.66.5
6. ऋग्वेद10.97.3
7. ऋग्वेद10.97.10
8. अथर्ववेद 7.27
9. अथर्ववेद 8.7
10. अथर्ववेद 8.7.5-6
11. अथर्ववेद 8.7.1
12. अथर्ववेद 8.7.17
13. अथर्ववेद 8.7.9
14. अथर्ववेद 2.3.4
15. अथर्ववेद 8.7.12
16. तैत्तिरीय संहिता 7.3.19-20
17. वाजसनेयी संहिता 22.28
18. विष्णुपुराण 2.7.37-38
19. वृहदारण्यकोपनिषद् 3.9.28
20. अथर्ववेद 10.3.31